

अब मैं हिंदी में थोड़ासा आपको बताना चाहती हूँ कि सहजयोग में हम लोग अब ये नहीं जानते कि हमारे बारे में हजारों वर्षों से बताया गया था कि ऐसे महान लोग संसार में आयेंगे और पहाड़ के पहाड़ ऐसे बड़े बड़े वृक्षों के बड़े बड़े अरण्य संसार में घुमेंगे।

जो बोलते हुए, चलते हुए दुनिया को उनकी इच्छाओं की पूर्ति के कल्पतरु मिलेंगे।

जैसे उनको आशिर्वाद देंगे और उनके एक एक व्यक्ति में जैसे सागर उमड़ते हों।

जिसमें कि अमृत बोलता हो ऐसे सागर ऐसे सूरज होंगे।

चमकते हुए सूरज कि जिसके अंदर कोई भी दाह नहीं, अग्नी नहीं ऐसे चंद्रमा जिसके ऊपर कोई कलंक नहीं यह आपके वर्णन हजारों वर्ष पहले उन्होंने किए और तीन सौ वर्ष पहले ज्ञानेश्वरजी ने किए कि कितना आपका महत्त्व उन्होंने बताया।

कितना महत्त्व आपको दिया? कि कितना जरूरी हैं सारे दुनिया के लिये एक आशा थी।

इस तरह से हो रहा और हो गया।

लेकिन अभी इसकी प्रगति मेरे विचार से बहुत बहुत धीमी हैं।

इसकी प्रगति बहुत धीमी हैं।

प्रगति आपके वजह से धीमी हो जाती हैं।

ऐसी जगह तब मन लगता है जहाँ हम अपने को गिरा लेते हैं।

अपना चित्त इस पेड़ का जैसा पृथ्वी से पूरी तरह से निगडीत है ऐसा आपको अपने माँ के साथ निगडीत रखना चाहिये।

और उसकी जो ऊंचाई है उसके ओर दृष्टि रखनी चाहिए।

यह ऊंचाई जो भी इन्होंने हासिल की है वो इस वातावरण से लड़कर, झगड़कर बाहर आकर अपना सर ऊंचा उठाकर और जो लोग अपना सर दुनियाई चीजों के लिये, कृत्रिम चीजों के लिये, बाह्य चीजों के लिये झुका लेते हैं वो कैसे उठ सकते हैं? या जो अपना चित्त इस धरती माँ से हटा लेते हैं हटा लेते हैं वो तो मर ही जायेंगे।

इसलिये हर सहजयोगियोंका यह कर्तव्य है।

यह पूरी तरह से कर्तव्य है कि वो जाने कि सारी दुनिया आप कि तरफ आँख लगाये बैठी हुई है और आप अपने गौरव को पहचानिये।

आप लोग यहाँ पर आज मुझे वचन देने आए है इस इंटरनेशनल सेमिनार में की माँ तुम जितनी मेहनत करती हो उसी तरह से हम भी मेहनत करेंगे।

उस शांत में गौरव में आप अपने को उंचा उठाए।

अपने बारे में पूरी आपको कल्पना होनी चाहिए की आप है क्या।

आपसे सबसे यह बिनती है कि कृपया अपनी ओर नजर रखें।

आप सब सिंघासन पर बैठे हैं उस सिंघासन को पाइये।

उसके जैसे हो जाइये।

दुनिया के मुकाबले में आप लोग बहुत बड़ी चीज हैं।